श्री

जिव्हामूल - विध्दकर्म

प्रातः स्मरणीय कै. वै. नाना जी से आयुर्वेद सिखने का अवसर दुर्भाग्यवश मुझे मिला नही | लेकीन उनके जैसेही ऋषीतुल्य व्यक्तिमत्व कै. वैदय रा. ब. गोगटे सर से प्रत्यक्ष आयुर्वेद सिखनेका सौभाग्य मुझे मिला | कै. वैद्य रा. ब. गोगटे सर, जिन्होने मेरे जैसे असंख्य विद्यार्थीयोंको विध्दकर्म - अग्निकर्म - रक्तमोक्षण हाथ को पकड के सिखाया | दोनो गुरुजनोंको को वंदन करके मेरे कुछ विचार यहा प्रस्तुत कर रहा हुँ |

आजकी भागदौड की जिंदगी में बहोत सारे Parents का अपने बच्चो पे ध्यान कम है | बहोत सारे बच्चो मे तोतलापन, Slutter Speech, दो शब्द उच्चारने में कठीणाई, बोलते समय शब्द के बजाय हवा हि निकलना ऐसे लक्षण एक तो जन्म से या जन्म के बाद दिखाई देते है | इसपे Allopathy शास्त्र मे Speech Therapy के अलावा दुसरा कोई रास्ता नही |

लेकीन हमारे आयुर्वेद मे थोडा Search करें तो इस समस्या का स्थायी - (Permanent Solution) उपचार - विध्दकर्म - अभ्यंतर औषधी और जरुरत पडे तो कृमिघ्न बस्ती ऐसा एक उत्तम Protocol मिल जाता है |

"जिव्हारोगेषु अधो जिव्हायां दन्तव्याधिषु | सु. शा. ८/१७

अर्थात - जिव्हारोग, दंतरोग, कंठरोग, मुखरोग इसमें 'जिव्हायां अधो' इसका टिका अनुसार अधोजिव्हा / जिव्हा मूलप्रदेशी विध्द करना है, ऐसे आचार्य ने सिराव्यध अध्याय मे बताया है |

जिव्हारोग संदर्भानुसार कौनसे है तो →

१) जिव्हास्तंभ
२) मिन-मिन वाक्य
२) गद् - गद् व्याक्य
४) जिव्हा जाड्यता

अर्वाचीन शास्त्रानुसार इसे Slutter Speech कहते है |

- ***कहाँ करना है ?***

- दो पाँइंटपे विध्दकर्म → भ्रुमध्य , जिव्हामूल

बहोत बार ऐसी condition मे विध्दकर्म करते है ये मालुम होता है, लेकीन Exactly कहाँ करना है ये मालुम नही रहता | इसलिये जिव्हा तालु प्रदेशी स्पर्श करने के बाद दिखाई देने वाली Posteriorly जिव्हा कि शारीर रचना का फोटो यहां दे रहे है |

जिव्हा स्थिती – उन्नामित विद्ध जिव्हा अग्रस्य अधो जिव्हायाम।

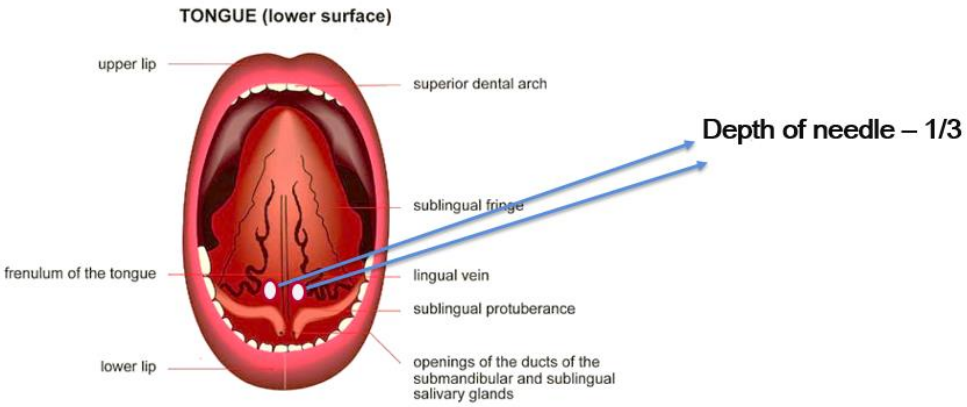

- इसमें जिव्हा frenulum of Tongue से दो भागों में divide होती है | उससे उभय बाजू में नील-कृष्णवर्णीय lingual Vein दिखती है | दोनो के बीच में [Right & Left frenulum of Tongue - lingual Vein] उभय बाजू में विध्दकर्म करना है |

- ***किससे करना है ?***

- Diabetic Needle / 26 ½ Needle

- ***विध्दकर्म होने के बाद ?***

- रुग्ण को याद से अम्ल - लवण sensation जिव्हा को taste हो रही है क्या? ये पुछना है |

- ***कितनी बार करना है ?***

- सप्ताह मे ३ बार / २ बार

- ***विध्दकर्म कार्यकारीत्व***

- जिव्हामूल पे विध्दकर्म करने से शब्दवाही स्त्रोतोंका अवरोध अस्त्र विस्त्रूति से निकल जाता है |
- भ्रुमध्यके पीछे आज्ञाचक्र का स्थान है और भ्रुमध्य पे विध्दकर्म " संज्ञास्थापनार्थ " हम करते है | अनुपस्थित वाकप्रवृत्ति / शब्द, या गये हुये शब्द की संज्ञा मनको अवगत कराने हेतु ये विध्दकर्म किया जाता है |

- ***चिकित्सा →***

इस व्याधी में मैने पांचभौतिक चिकित्सा का उपयोग किया है | ऐसे रुग्ण में सिर्फ विध्दकर्म करने से उपशय मिलता है लेकीन पुरा उपशय मिलने के लिये आभ्यंतर चिकित्सा भी उतनी महत्वपूर्ण है |
विध्दकर्म is not a main Treatment, It is a part of main Treatment.

१) कृमी चिकित्सा →

- मेरे ज्यादा तर रुग्ण below 12 yrs के थे | कृमि चिकित्सा करते समय चातुर्थक [मेदोपाचक] का मुख्यतः use
- छोटे बच्चोमें मधुर सेवनादि हेतु नुसार और वय प्रभावानुसार आंत्र में क्लेदाधिक्य होके कृमि आंत्र को चिपकके बैठते है |
- चातुर्थक ये लेखन कर्म द्वारे वो layer निकालने का कर्म करता है |
- इस तरीके से चातुर्थक कृमिभूमी प्रकृतीस्थापन ये कर्म करता है |

२) श्व / हरळू →

- ये दोनो में से एक औषधि वयानुसार / पांचभौतिक प्रकृतीनुसार उपयोग में लाना है |
- Slutter Speech से शारीरिक तणाव आके वो वृक्क पे प्रकट होता है |
- इस प्रकार के रुग्ण में एक प्रकारका मानसिक तणाव दिखता है | ऐसे बच्चोंकी तीन-चार लोगो में या सबके आगे बोलणे में डरते है |
- कोई हमे चिडायेगा, माँ-पिताजी चिल्लायेंगे, इसके वजह से उसके मन में खुद के प्रति न्युनगंड तयार हो जाता है | और इस सतत के विचार / चिंतन से बुध्दींद्रिय पे तणाव आके, उसके यकृत - प्लीहा पर बुध्दी

के नाद दिखते है | ऐसी ही परिस्थिती रही तो आगे जाके वृक्क में भी तणाव [स्थानिक प्रदेशी पिडने वेदना] ये लक्षण दिखाई देता है | इस वृक्क के उपर का तणाव फिर वो शारीरिक हो या मानसिक निकालने के लिये श्व / हरळू उपयोगी रहता है |

३) उदान वायु बलवृध्दी →

- संहिता में कहीभी उदानवायुपे, प्राणवायुपे, अवलंबक कफ पे, साधक पित्त पे जानेवाले द्रव्य या कल्प फलश्रुति में उल्लेख नही है | लेकीन हम युक्ती प्रमाण से सोचे तो इसका उत्तर हमें मिलता है |

उदान वायुबल वृध्दी के लिये मैने वर्ण्य गण और अनंता + मंजिष्ठा इनके संयोग से बनाया हुआ जिंगी शारदी योग का इस्तेमाल किया | इसके पीछे की सोच ये है कि,

उदान वायु कर्म →

वाक् प्रवृत्ति प्रयत्न उर्जा बल वर्ण स्मृतिक्रियः | - अ. ह्र. सू. १५/५

याने उदान वायु प्राकृत रहेगा तो हि, वाकप्रवृत्ति - प्रयत्न - बल - वर्ण - उर्जा ये कर्म प्राकृत रहेगा | इसको अलग तरीके से सोचे तो, जो द्रव्य वर्ण प्राकृत रखने वाले है क्या वो वाकप्रवृत्ति सुधार सकते है क्या? तो हाँ ये होता है, मैने ये किया है |

४) *कल्याणक लेह / वचा / पिंपळी / सैंधव* / अक्कलकारा इसमें से एक या दोन तीन द्रव्य का संयोग बनाके जिव्हा के उपर प्रतिसारण किया हररोज तो जिव्हा लाघव प्राप्त होता है |

उपर दि हुई चिकित्सा से ९०% रुग्णमें पूर्ण उपशय मिला और वो भी अपूर्नभव. इस चिकित्सा को रुग्ण में व्यक्तिपरत्वे ३ महिने से ९ महिने या १ साल भी ठीक होने में लग सकता है |
इस चिकित्सा Protocol में और सुधारणा हो सकती है - मतभेद भी रह सकते है | भिन्न मत स्वागत |

वै. अमोल उ. बनसोडे
विध्दकर्म - अग्निकर्म तज्ञ
एम. डी. (आयुर्वेद क्रिया शारीर)
उरुळी कांचन, पुणे (महाराष्ट्र)
मोबा. नं. ९९२२७५०६८९